

नवधृति

PRGI No. RJBIL/26/A0880



मानवाधिकार

सच साहस न्याय की खबर समाचा

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 05

सम्पादक: श्रवण पंवार, जयपुर मो.: 9251120059

जयपुर, अगस्त, 2026



NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
DIGITAL & PRINT MEDIA

www.nms.news

We are at-



E-mail: info@nms.news

— सच • अधिकार • समाज —

आवश्यकता

NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
— DIGITAL & PRINT MEDIA —

देश-प्रदेश में समाचार पत्रिका के विस्तार हेतु
पत्रकार/संवाददाता एवं विज्ञापन एजेंट्स
की आवश्यकता है।

अगर आपको अपने क्षेत्र व देश की समस्याओं को



सामने लाने का जुनून है



पत्रकार के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं



समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहयोग करना चाहते हैं



तो यह आपके लिये एक सुनहरा अवसर है।

हमसे जुड़ें, बदलाव का हिस्सा बनें !



आपको मिलेगा



समाज में सकारात्मक
बदलाव लाने का
अवसर



अपनी आवाज
को मंच देने का
अवसर



पहचान बनाएं,
सम्मान पाएं,



करियर में नई
ऊँचाइयों को छुएं

संपर्क करें

जिला संवाददाता – तहसील/ब्लॉक रिपोर्टर,
ब्यूरो चीफ

मुख्य कार्यालय :
जयपुर, राजस्थान

9251120059



www.nms.news

“ मानवाधिकार की रक्षा – हमारा संकल्प, आपकी आवाज – हमारी ताकत ”

महादेव पंवार
सॉफ्टवेयर इंजीनियर व डवलपर्स



नवधृति

PRGI No. RJBIL/26/A0880



मानवाधिकार

सच साहस न्याय की खबर समाचा

प्रकाशक — श्रवण पंवार, जयपुर

वर्ष : 01

अंक : 05

दिनांक : अगस्त, 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
के सदस्य शुल्क का विवरण



सदस्यता शुल्क (वार्षिक)
400/- रुपये पोस्टेज सहित

प्रकाशक एवं सम्पादक
श्रवण पंवार
जयपुर (राजस्थान)

जयपुर कार्यालय
पथ नं. 6, प्लॉट नं-39, नियर खेतान
हॉस्पिटल, विजयवाड़ी, सीकर रोड़,
जयपुर (राज.) 302039
मो.: 9251120059
www.nms.news
E-mail: info@nms.news

कम्प्यूटर डिजाईनिंग
जयते प्रिंटर्स मो.: 7790990770

नोट- समस्त विवाद जयपुर
न्यायालय के अंतर्गत रहेगा

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01	सम्पादकीय	01
02	हनुमानगढ़ जिल	02
03		03
04		04
05		05
06		07
07		08
08		09
09		10
10		12
11		13
12		19
13		20
14		21
15		22

स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक व सम्पादक श्रवण कुमार पंवार के लिए प्रिन्टर्स (मुद्रक)
विजेन्द्र प्रकाश हलचल, विजय पथ, धानी नगर, श्याम नगर, फुलेरा, जयपुर (राजस्थान)
से मुद्रित एवं लखेरा शक्ति क्रियेशन प्रा.लि., सी-1 सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया,
22 गोदाम, जयपुर (राज.) 302039 से प्रकाशित

अगस्त: स्वतंत्रता, कर्तव्य और राष्ट्र निर्माण का संकल्प

प्रिय पाठकों,

आप सभी का 'नवधृति मानवाधिकार समाचार' के अगस्त 2026 विशेषांक में हार्दिक स्वागत है।

अगस्त का महीना प्रत्येक भारतीय के लिए केवल एक कैलेंडर का महीना नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, त्याग, बलिदान, राष्ट्रीय गौरव और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। यह वही पावन महीना है, जब अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान के परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। आज हम जिस स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, वह लाखों ज्ञात और अज्ञात वीरों के त्याग का अमूल्य प्रतिफल है।

स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक के सम्मान, समानता, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, अभिव्यक्ति और सुरक्षित जीवन के अधिकार का आधार है। भारत का संविधान हमें अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी बोध कराता है। इसलिए सच्ची देशभक्ति केवल तिरंगा फहराने तक सीमित नहीं, बल्कि ईमानदारी, अनुशासन, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण, महिला सम्मान, बाल सुरक्षा और मानव सेवा के रूप में हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देनी चाहिए।

अगस्त का महीना धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाग पंचमी, रक्षाबंधन, श्रावण पूर्णिमा तथा अन्य पर्व भारतीय संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों और प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश देते हैं। रक्षाबंधन हमें केवल भाई-बहन के प्रेम का नहीं, बल्कि समाज में विश्वास, सुरक्षा और पारस्परिक जिम्मेदारी का भी संदेश देता है।

वर्तमान समय में भारत तीव्र गति से विकास के पथ पर अग्रसर है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, शिक्षा, कृषि, उद्योग और डिजिटल क्रांति के क्षेत्र में देश निरंतर नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। इन उपलब्धियों के साथ यह भी आवश्यक है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और प्रत्येक नागरिक को समान अवसर प्राप्त हो।

इस अंक में हमने स्वतंत्रता दिवस विशेष, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महान स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान, राष्ट्रीय एकता, मानवाधिकार, महिला एवं बाल अधिकार, सरकारी योजनाओं, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सरोकार तथा राष्ट्र निर्माण से जुड़े विषयों पर विशेष सामग्री प्रस्तुत की है। हमारा उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता, सकारात्मक सोच और जिम्मेदार नागरिकता का विकास करना है।

'नवधृति मानवाधिकार समाचार' सदैव सत्य, निष्पक्षता और जनहित की पत्रकारिता के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा विश्वास है कि सशक्त लोकतंत्र वही है जहाँ नागरिक जागरूक हों, अधिकारों के प्रति सजग हों और अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें। समाज में सकारात्मक परिवर्तन केवल सरकारों से नहीं, बल्कि प्रत्येक जागरूक नागरिक की सक्रिय भागीदारी से संभव होता है।

हम अपने सभी पाठकों, संवाददाताओं, लेखकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। आपका विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है। हम आपसे अनुरोध करते हैं कि अपने क्षेत्र की सकारात्मक पहल, जनहित के मुद्दे, सामाजिक सेवा के कार्य और प्रेरणादायक समाचार हमें भेजते रहें, ताकि उन्हें व्यापक स्तर पर समाज तक पहुँचाया जा सके।

आइए, इस स्वतंत्रता माह में हम सभी यह संकल्प लें कि- संविधान और राष्ट्र ध्वज का सम्मान करेंगे, मानवाधिकारों की रक्षा और सामाजिक न्याय के लिए कार्य करेंगे, महिला, बालक, बुजुर्ग और दिव्यांगजनों के सम्मान एवं सुरक्षा को प्राथमिकता देंगे, पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ भारत अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएँगे, सत्य, सेवा, सद्भाव और राष्ट्रहित को अपने जीवन का आधार बनाएँगे। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा, जब देश का प्रत्येक नागरिक सम्मान, सुरक्षा, समान अवसर और न्याय के साथ जीवन जी सके। यही स्वतंत्र भारत का सपना है और यही हमारा राष्ट्रीय संकल्प भी। आप सभी को 79वें स्वतंत्रता दिवस एवं अगस्त माह के सभी पावन पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिन्द! जय भारत!

—संपादक (नवधृति मानवाधिकार समाचार)

विश्व आदिवासी दिवस:

प्रकृति, संस्कृति और मानव सभ्यता के सच्चे संरक्षक

आदिवासी समाज का सम्मान, प्रकृति का सम्मान है। उनकी संस्कृति हमारी पहचान है और उनका सशक्तिकरण राष्ट्र की प्रगति का आधार है।

-सम्पादक

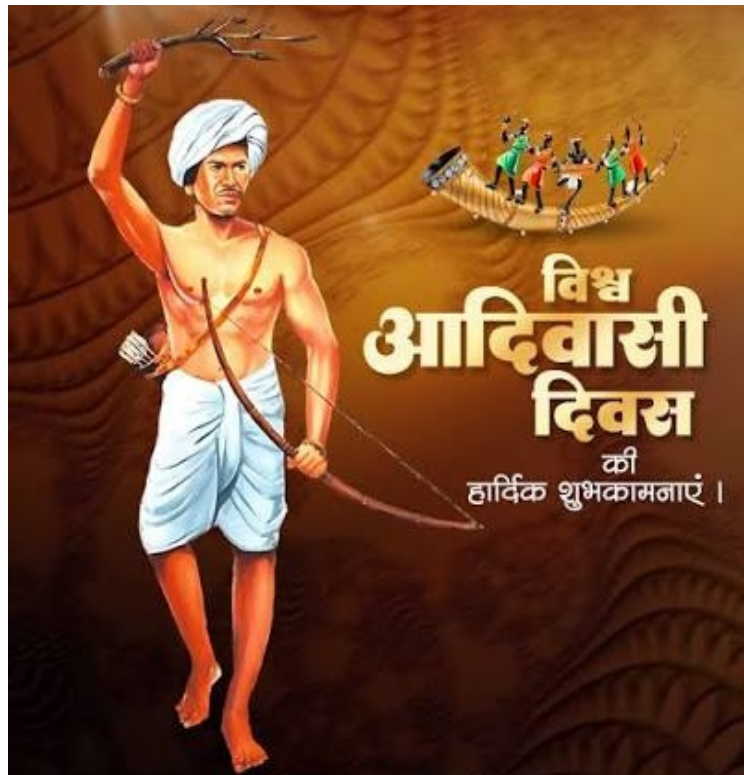
प्रतिवर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य विश्वभर के आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा, उनकी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। वर्ष 1994 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। तब से यह दिन आदिवासी समाज के योगदान को सम्मान देने और उनके समग्र विकास के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता का प्रतीक बन गया है।

भारत विविध संस्कृतियों और परंपराओं का देश है, जहाँ सैकड़ों जनजातियाँ अपनी विशिष्ट पहचान के साथ निवास करती हैं। देश की जनजातीय आबादी ने सदियों से जल, जंगल और जमीन के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी जीवनशैली प्रकृति के साथ सामंजस्य, सामुदायिक सहयोग और सतत विकास का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

आदिवासी समाज की लोककला, लोकसंगीत, लोकनृत्य, हस्तशिल्प, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ, कृषि ज्ञान और जीवन मूल्य भारत की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाते हैं। भील, गोंड, संथाल, मुंडा, मीणा, गरासिया, उरांव, टोडा, खासी तथा अन्य अनेक जनजातियों की

परंपराएँ हमारी सांस्कृतिक विविधता की अमूल्य धरोहर हैं। विशेष रूप से राजस्थान की भील, मीणा, गरासिया, सहरिया और डामोर जनजातियाँ राज्य की लोकसंस्कृति और सामाजिक जीवन को विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में भी आदिवासी वीरों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अनेक जनजातीय नेताओं और समुदायों ने अन्याय, शोषण और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष किया तथा अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनका इतिहास भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणादायी विरासत का अभिन्न हिस्सा है।



हालाँकि आधुनिक भारत में आदिवासी समुदायों की स्थिति में अनेक क्षेत्रों में सुधार हुआ है, फिर भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पोषण, आधारभूत सुविधाओं, संचार, डिजिटल पहुँच तथा आजीविका के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले अनेक परिवारों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ समान रूप से पहुँचाना अभी भी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया में उनकी सांस्कृतिक पहचान, पारंपरिक ज्ञान और संवैधानिक अधिकार सुरक्षित रहें।

भारत का संविधान अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक उत्थान के लिए अनेक विशेष प्रावधान करता है। विभिन्न सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों, वनाधिकार संबंधी प्रावधानों, कौशल विकास कार्यक्रमों और आजीविका योजनाओं के माध्यम से जनजातीय समुदायों के सशक्तिकरण का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इन प्रयासों की

सफलता तभी संभव है जब समाज भी समान भागीदारी, सम्मान और संवेदनशीलता का परिचय दे।

विश्व आदिवासी दिवस हमें यह संदेश देता है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी सार्थक मानी जाएगी जब विकास की मुख्यधारा में प्रत्येक समुदाय को समान अवसर, सम्मान और न्याय मिले। आदिवासी समाज केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का रक्षक ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक जीवन और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का जीवंत उदाहरण भी है। उनसे सीखकर हम सतत विकास और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का मार्ग खोज सकते हैं।

आइए, इस विश्व आदिवासी दिवस पर हम संकल्प लें कि आदिवासी समाज की संस्कृति, भाषा, परंपराओं और अधिकारों का सम्मान करेंगे, उनके विकास में सहभागी बनेंगे तथा एक ऐसे भारत के निर्माण में योगदान देंगे जहाँ समानता, सामाजिक न्याय और समावेशिता केवल आदर्श नहीं, बल्कि व्यवहार का हिस्सा हों।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवसः

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की निर्णायक भूमिका

प्रतिवर्ष 12 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा, नवाचार, नेतृत्व क्षमता तथा राष्ट्र और विश्व के विकास में उनकी भूमिका को सम्मान देना और उनसे जुड़े मुद्दों के प्रति समाज को जागरूक करना है। वर्ष 1999 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस दिवस को मनाने की घोषणा की थी और वर्ष 2000 से इसे विश्वभर में मनाया जा रहा है। आज यह दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि युवाओं को अवसर, समानता और सशक्त भागीदारी प्रदान करने का वैश्विक संकल्प है।

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। देश की बड़ी आबादी युवाओं की है, जो भारत की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है। यदि इस शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल, रोजगार के अवसर, वैज्ञानिक सोच और नैतिक मूल्यों से जोड़ा जाए, तो भारत आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि युवाओं को राष्ट्र निर्माण का आधार स्तंभ कहा जाता है।

आज का युवा केवल नौकरी की तलाश करने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला, नवाचार को आगे बढ़ाने वाला और सामाजिक परिवर्तन का वाहक भी बन रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्टार्टअप, कृषि, खेल, विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा, रक्षा, कला और उद्यमिता जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय युवाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उनकी उपलब्धियाँ विश्व स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा को निरंतर बढ़ा रही हैं।

इसके साथ ही युवाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच, कौशल विकास, रोजगार, मानसिक स्वास्थ्य, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, साइबर अपराध, डिजिटल दुष्प्रचार, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताएँ ऐसे विषय हैं जिन पर गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं को केवल तकनीकी रूप से दक्ष बनाना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उन्हें संवेदनशील, जिम्मेदार, लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास रखने वाला और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाना भी उतना ही आवश्यक है।

देश के विकास में युवाओं की भागीदारी केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, आपदा राहत, स्वच्छता अभियान, महिला सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में भी युवा उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। स्वयंसेवी संगठनों, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) राष्ट्रीय कैडेट

कोर (NCC), युवा मंडलों और विभिन्न सामाजिक अभियानों के माध्यम से लाखों युवा समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला रहे हैं।

भारत के महान विचारकों ने भी युवाओं की शक्ति को राष्ट्र के भविष्य से जोड़ा है। स्वामी विवेकानन्द का यह विचार आज भी प्रेरणा देता है कि युवा आत्मविश्वास, चरित्र, ज्ञान और सेवा की भावना से राष्ट्र को नई दिशा दे सकते हैं। उनका संदेश आज भी युवाओं को अपने भीतर की क्षमता पहचानने और समाज के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, शैक्षणिक संस्थान, उद्योग जगत और समाज मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करें जहाँ प्रत्येक युवा को अपनी प्रतिभा विकसित करने, कौशल अर्जित करने और सम्मानजनक अवसर प्राप्त करने का समान अधिकार मिले। जब युवाओं को सही दिशा, उचित मार्गदर्शन और पर्याप्त अवसर मिलते हैं, तब वे केवल अपना भविष्य नहीं बदलते, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्रगति का आधार बनते हैं।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस हमें यह विश्वास दिलाता है कि भारत का भविष्य उसके युवाओं के हाथों में सुरक्षित है। ऊर्जा, नवाचार, अनुशासन, सेवा और सकारात्मक सोच से परिपूर्ण युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर और समावेशी भारत का निर्माण कर सकते हैं। आइए, इस अवसर पर हम संकल्प लें कि युवाओं की क्षमता को पहचानेंगे, उन्हें आगे बढ़ने के अवसर देंगे और राष्ट्र निर्माण की यात्रा में उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलेंगे।

संपादकीय संदेश—

‘युवा केवल कल का भविष्य नहीं, बल्कि आज की सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनके सपनों, प्रतिभा और परिश्रम से ही विकसित भारत का निर्माण संभव है।’

विश्व अंगदान दिवस: जीवनदान का सबसे बड़ा महादान

प्रतिवर्ष 13 अगस्त को विश्व अंगदान दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य लोगों को अंगदान के महत्व के प्रति जागरूक करना, अंगदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करना तथा अधिक से अधिक लोगों को स्वेच्छा से अंगदान का संकल्प लेने के लिए प्रेरित करना है। चिकित्सा विज्ञान की प्रगति ने आज यह संभव बना दिया है कि एक व्यक्ति का अंगदान कई लोगों को नया जीवन दे सकता है। इसलिए अंगदान को केवल एक चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानवता की सर्वोच्च सेवा और जीवनदान का महादान माना जाता है।

विश्वभर में लाखों ऐसे मरीज हैं जो हृदय, यकृत, गुर्दे, फेफड़े, अग्न्याशय या अन्य महत्वपूर्ण अंगों के प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इनमें से अनेक लोगों का जीवन केवल इस कारण संकट में पड़ जाता है कि समय पर उपयुक्त अंग उपलब्ध नहीं हो पाता। यदि समाज में अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़े और अधिक लोग स्वेच्छा से अंगदान का संकल्प लें, तो असंख्य मरीजों को नया जीवन मिल सकता है।

विशेषज्ञों के अनुसार एक मृत अंगदाता अपने अंगों और ऊतकों के माध्यम से कई लोगों का जीवन बचाने या बेहतर बनाने में योगदान दे सकता है। गुर्दे, यकृत, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय, छोटी आंत तथा नेत्रों सहित विभिन्न अंग और ऊतक चिकित्सा मानकों के अनुसार प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं। यही कारण है कि अंगदान को 'जीवन से भी आगे बढ़कर मानवता की सेवा' कहा जाता है।

भारत में भी अंगदान के प्रति जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है, फिर भी आवश्यकता की तुलना में दाताओं की संख्या अभी भी कम है। इसका प्रमुख कारण जानकारी का अभाव, सामाजिक भ्रांतियाँ, धार्मिक आशंकाएँ तथा अंगदान से जुड़ी गलत धारणाएँ हैं। वास्तव में विभिन्न धर्म मानव सेवा और परोपकार को सर्वोच्च मानते हैं तथा अंगदान को भी मानव कल्याण की भावना से जोड़कर देखा जाता है।

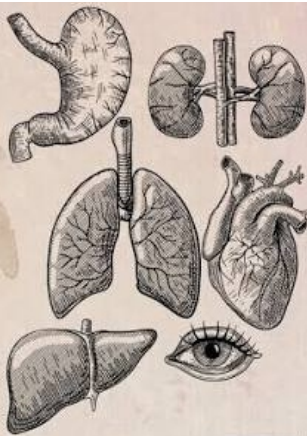
अंगदान की प्रक्रिया पूरी तरह चिकित्सा एवं कानूनी नियमों के अनुसार संपन्न की जाती है। किसी भी मृत व्यक्ति के अंगों का प्रत्यारोपण केवल निर्धारित चिकित्सीय मानकों और उसके अथवा उसके परिजनों की वैधानिक सहमति के आधार पर ही किया जाता है। इस प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और चिकित्सकीय नैतिकता का विशेष ध्यान रखा जाता है, जिससे अंगों का आवंटन आवश्यकता और चिकित्सा मानकों के अनुरूप हो सके।

विश्व अंगदान दिवस केवल जागरूकता का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है। हम अपने जीवनकाल में रक्तदान, नेत्रदान और अंगदान जैसे संकल्प लेकर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकते हैं। किसी अजनबी के जीवन में आशा की नई किरण बनना मानवता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि शैक्षणिक संस्थान, चिकित्सा संस्थाएँ, सामाजिक संगठन, धार्मिक नेता और मीडिया मिलकर अंगदान के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करें। सही जानकारी, संवेदनशील संवाद और जनजागरूकता अभियान ही इस दिशा में सबसे प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

विश्व अंगदान दिवस हमें यह संदेश देता है कि जीवन का सबसे बड़ा उपहार जीवन ही है। यदि हमारे एक निर्णय से किसी की साँसें लौट सकती हैं, किसी परिवार की खुशियाँ वापस आ सकती हैं और किसी बच्चे को नया भविष्य मिल सकता है, तो इससे बड़ा पुण्य और कोई नहीं हो सकता।

**बन कर
अंगदाता
दें किसी को
नए जीवन
की आशा**



देहदान का प्रेरक संकल्पः

लकवाग्रस्त जीवन जी रहे प्रवीण व्यास ने समाज को दिया मानवता का अनुपम संदेश



समाज में ऐसे लोग विरले ही होते हैं, जो अपने जीवन के संघर्षों को समाज के लिए प्रेरणा में बदल देते हैं। ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं—

प्रवीण व्यास (60 वर्ष) जिन्होंने अपने निधन के उपरांत देहदान कर मानव सेवा की एक अनूठी मिसाल प्रस्तुत की है।

करीब 27 वर्ष की आयु में रीढ़ (स्पाइनल कॉर्ड) में गंभीर चोट लगने के कारण छाती का निचला पूरा शरीर लकवाग्रस्त हो गया। वर्षों से वे शारीरिक चुनौतियों के बावजूद अदम्य साहस, सकारात्मक सोच के साथ कम्प्यूटर पर कार्य कर अपनी जीविका चलाते हैं और समाज सेवा की भावना के साथ जीवन जी रहे हैं। कठिन परिस्थितियों ने उनके हौसले को कभी कमजोर नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने अपने जीवन को दूसरों के लिए प्रेरणा का माध्यम बनाया।

प्रवीण व्यास का मानना है कि मृत्यु के बाद भी मनुष्य समाज के लिए उपयोगी बन सकता है। इसी भावना से उन्होंने देहदान का निर्णय लिया। उनका विश्वास है कि उनकी देह चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान देगी। विशेष रूप से न्यूरोसर्जन बनने वाले मेडिकल विद्यार्थियों और चिकित्सकों को मानव शरीर, विशेषकर रीढ़ और तंत्रिका तंत्र की संरचना एवं अध्ययन में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा, जिससे भविष्य में अनेक रोगियों का बेहतर उपचार संभव हो सकेगा।

उन्होंने कहा कि यदि उनकी देह के अध्ययन से एक भी डॉक्टर बेहतर प्रशिक्षित होता है और वह भविष्य में किसी मरीज को नया जीवन दे पाता है, तो यही उनके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य और संतोष होगा।

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार देहदान मेडिकल शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। मेडिकल कॉलेजों में विद्यार्थियों को मानव शरीर की वास्तविक संरचना का अध्ययन करने का

अवसर देहदान के माध्यम से ही मिलता है। इससे भावी चिकित्सकों की दक्षता बढ़ती है और चिकित्सा विज्ञान को नई दिशा मिलती है।

प्रवीण व्यास का यह निर्णय केवल एक व्यक्तिगत संकल्प नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरक संदेश है। यह बताता है कि सेवा केवल जीवन तक सीमित नहीं होती, बल्कि मृत्यु के बाद भी मानवता के लिए अमूल्य योगदान दिया जा सकता है।

आज जब समाज में अंगदान और देहदान के प्रति जागरूकता बढ़ने की आवश्यकता है, ऐसे में प्रवीण व्यास का यह कदम निश्चय ही अनेक लोगों को प्रेरित करेगा। उनका जीवन और उनका संकल्प इस बात का प्रमाण है कि सच्ची सेवा वही है, जो स्वयं से आगे बढ़कर आने वाली पीढ़ियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।



**ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES,
JODHPUR (RAJASTHAN)**

Basni Industrial Area, Jodhpur (Rajasthan) 342005 INDIA

Form No:.....

Date: 2 Nov. 2022

VOLUNTARY BODY DONATION FORM



I, Praveen Vyas s/o, d/o, w/o Late Shri N.L. Vyas
R/o JAYATE PRINTERS, In Front of Railway Station, Phalodi 342301 Dist. Jodhpur (Raj.)
age 56 years am willing to voluntarily donate my body after my death to All India Institute of Medical Sciences, Jodhpur (Rajasthan) for medical teaching & research purpose.

I desire that my next of the kin and member of my family, who will be present at the time of my death, will donate my body to All India Institute of Medical Sciences, Jodhpur (Rajasthan) on my behalf. Accordingly they will inform Department of Anatomy, All India Institute of Medical Sciences, Jodhpur (Rajasthan) regarding my death.

Witnesses Signature

(Signature with full name)

Full Name Sanjay Vyas S/o Late Shri N.L. Vyas

Full address with Contact No.

Address Ummedpura, Phalodi, 342301

JAYATE PRINTERS, In front of

Dist. Jodhpur (Raj.)

Railway Station, Phalodi 342301

Contact No. 9413134548 / 6375656533

Dist. Jodhpur (Raj.)

Mob.No. 7790990770 / 9414803346

Witnesses Signature

Full Name Adv. Gourav Thanvi

Address LATYAL BHAWAN, 80, Jawahar

Colony, Near Sardar Club, No.1 KV Road,

Contact No Dist. Jodhpur (Raj.) Mob.no. 9571705144

Contact Persons: Dr. Surajit Ghatak +91-80039-96868, Dr. Ashish Nayyar +91-80039-96928, Dr. Dushyant Agarwal +91-80039-96944, Mr. Manoj Mehta (Local Coordinator and Counsellor) +94141-27858.

स्वतंत्रता दिवस विशेष—

15 अगस्त: आजादी का अमर पर्व, बलिदानों की गाथा और विकसित भारत का संकल्प

भारत आज अपना 79वाँ स्वतंत्रता दिवस (2026) पूरे उत्साह, उल्लास और राष्ट्रभक्ति के वातावरण में मनाएगा। देशभर में तिरंगा शान से लहराएगा। राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से लेकर देश के सुदूर गाँवों तक स्वतंत्रता का उत्सव पूरे जोश और गर्व के साथ मनाया जाएगा। विद्यालयों, महाविद्यालयों, सरकारी एवं निजी संस्थानों, सामाजिक संगठनों तथा सार्वजनिक स्थलों पर ध्वजारोहण, राष्ट्रगान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रभात फेरियाँ, देशभक्ति गीत, भाषण प्रतियोगिताएँ और विभिन्न जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

यह केवल एक राष्ट्रीय पर्व नहीं, बल्कि उन लाखों ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के अद्वितीय त्याग, संघर्ष और बलिदान को स्मरण करने का अवसर है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर भारत को विदेशी शासन की बेड़ियों से मुक्त कराया। स्वतंत्रता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि आजादी सहज रूप से प्राप्त नहीं हुई, बल्कि इसके लिए असंख्य वीरों ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमा, गोलियाँ खाईं, वर्षों तक जेलों की यातनाएँ सही और अपने परिवारों तक का त्याग कर दिया।

लगभग दो शताब्दियों तक भारत अंग्रेजी शासन के अधीन रहा। इस अवधि में देश की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय उद्योग-धंधों को कमजोर किया गया, किसानों पर अत्यधिक कर लगाए गए और देश की संपदा का बड़े पैमाने पर दोहन हुआ। लेकिन भारतीय समाज ने कभी भी गुलामी को अपनी नियति स्वीकार नहीं किया। समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह हुए, जिन्होंने आगे चलकर व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन का स्वरूप ग्रहण किया।

स्वतंत्रता संग्राम की पहली बड़ी चिंगारी 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में भड़की। सैनिकों और आम जनता ने

मिलकर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। यद्यपि यह संघर्ष तत्काल सफल नहीं हुआ, लेकिन इसने पूरे देश में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। इसके बाद 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को संगठित स्वरूप प्रदान किया। धीरे-धीरे यह आंदोलन जन-जन का आंदोलन बन गया।

बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी के नेतृत्व ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने लाखों भारतीयों को स्वतंत्रता के संघर्ष से जोड़ा। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। दूसरी ओर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का गठन कर सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ और अनेक क्रांतिकारियों ने अपने बलिदान से देशवासियों में स्वतंत्रता की अलख जगाई।

15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम क्षण था, जब सदियों की पराधीनता समाप्त हुई और भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विश्व मानचित्र पर स्थापित हुआ। उस ऐतिहासिक अवसर पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना प्रसिद्ध 'नियति से साक्षात्कार' भाषण दिया, जिसने नए भारत की दिशा और दृष्टि को विश्व के सामने प्रस्तुत किया। अगले दिन लाल किले पर पहली बार स्वतंत्र भारत का तिरंगा फहराया गया और करोड़ों भारतीयों के सपनों को नई उड़ान मिली।

आज भी स्वतंत्रता दिवस का मुख्य राष्ट्रीय समारोह लाल किले पर आयोजित होता है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं, राष्ट्र को संबोधित करते हैं और देश की उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भविष्य की योजनाओं का उल्लेख करते हैं। तीनों सेनाओं

की टुकड़ियाँ राष्ट्रीय सम्मान प्रदर्शित करती हैं और देशभक्ति के वातावरण में पूरा राष्ट्र एक सूत्र में बंधा दिखाई देता है।

देशभर के विद्यालयों में बच्चों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति गीत, समूह नृत्य, लघु नाटिकाएँ और प्रेरक भाषण इस पर्व को और अधिक जीवंत बना देते हैं। अनेक स्थानों पर स्वतंत्रता सेनानियों एवं शहीदों के परिजनों का सम्मान किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रभात फेरियाँ, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर तथा जनसेवा कार्यक्रमों के माध्यम से स्वतंत्रता दिवस को समाजोपयोगी स्वरूप दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा इस पर्व का सबसे बड़ा आकर्षण होता है। केसरिया रंग साहस और त्याग, सफेद रंग शांति और सत्य तथा हरा रंग समृद्धि और विकास का संदेश देता है। बीच में स्थित अशोक चक्र की 24 तीलियाँ निरंतर प्रगति, न्याय, कर्म और गतिशील जीवन का प्रतीक हैं। तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि भारत की अस्मिता, सम्मान और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। स्वतंत्रता दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं है, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है। आज़ादी के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। कृषि, विज्ञान, अंतरिक्ष

अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, रक्षा और खेलों में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बनाई है। भारतीय लोकतंत्र आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ करोड़ों नागरिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

इसके साथ ही देश के सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पर्यावरण संरक्षण, जल संकट, सामाजिक असमानता और साइबर अपराध जैसी समस्याएँ आज भी गंभीर चिंता का विषय हैं। विकसित भारत के निर्माण के लिए इन चुनौतियों का समाधान सरकार के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है।

विशेषज्ञों का मानना है कि स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता भी है। जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति विकास की मुख्यधारा से नहीं जुड़ता, तब तक स्वतंत्रता का उद्देश्य पूर्ण नहीं माना जा सकता। इसी सोच के साथ देश में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, डिजिटल विकास, कौशल विकास और आत्मनिर्भरता पर विशेष बल दिया जा रहा है।



युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता दिवस से विशेष प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। देश के भविष्य की बागडोर युवाओं के हाथों में है। यदि युवा अनुशासन, ईमानदारी, नवाचार, वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रसेवा की भावना के साथ आगे बढ़ेंगे, तो भारत विश्व की अग्रणी शक्तियों में और अधिक मजबूती से स्थान प्राप्त करेगा। स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस भारत का सपना देखा था, उसे साकार करने की जिम्मेदारी आज के युवाओं पर ही है।

सामाजिक संगठनों का भी मानना है कि स्वतंत्रता दिवस केवल सरकारी आयोजन तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इस दिन नागरिकों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, वृक्षारोपण, गरीबों की सहायता, शिक्षा के प्रसार तथा सामाजिक सद्भाव जैसे कार्यों का संकल्प लेना चाहिए। यही राष्ट्रभक्ति की सच्ची भावना होगी।

देश के विभिन्न राज्यों में भी स्वतंत्रता दिवस उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। राजस्थान, गुजरात, पंजाब, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, असम, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों सहित पूरे देश में सांस्कृतिक विविधता के साथ राष्ट्रीय एकता का अद्भुत दृश्य देखने को मिल रहा है। विभिन्न भाषाएँ, वेशभूषाएँ और परंपराएँ होने के बावजूद तिरंगे के नीचे पूरा

भारत एक परिवार के रूप में खड़ा दिखाई देता है। इतिहासकारों का कहना है कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक सतत जिम्मेदारी है। प्रत्येक पीढ़ी को इसे अपने आचरण, कर्तव्यों और राष्ट्रहित के कार्यों से सुरक्षित रखना होता है। संविधान का सम्मान, कानून का पालन, राष्ट्रीय एकता की रक्षा और सामाजिक समरसता को मजबूत बनाना प्रत्येक भारतीय का दायित्व है।

आज जब पूरा देश स्वतंत्रता का अमृत पर्व मनाने की भावना के साथ विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता, ईमानदारी और सेवाभाव से योगदान दे। स्वतंत्रता का उत्सव तभी सार्थक होगा जब प्रत्येक भारतीय अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों का भी पूरी निष्ठा से पालन करेगा।

स्वतंत्रता दिवस हमें यह संदेश देता है कि राष्ट्र सर्वोपरि है। देश की आज़ादी लाखों बलिदानों की अमूल्य विरासत है। इस विरासत को सुरक्षित रखना और भारत को ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, समृद्धि, शांति और मानवता के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाना हम सभी का साझा संकल्प होना चाहिए।

आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि एक स्वच्छ, शिक्षित, समरस, आत्मनिर्भर, विकसित और सशक्त भारत के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान देंगे। यही हमारे अमर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वतंत्रता दिवस
INDEPENDENCE DAY
श्रद्धांजलि

स्वतंत्र भारत का प्रथम ध्वजारोहण— गौरव, स्वाभिमान और नवयुग का ऐतिहासिक आरंभ



15 अगस्त 1947 भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम दिवस है, जब सदियों की गुलामी की बेड़ियाँ टूट गईं और भारत ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में नई यात्रा प्रारंभ की। इस ऐतिहासिक अवसर का सबसे भावनात्मक और प्रेरणादायक क्षण था—स्वतंत्र भारत का प्रथम ध्वजारोहण। यह केवल तिरंगा फहराने का कार्यक्रम नहीं था, बल्कि करोड़ों भारतीयों के सपनों, संघर्षों और बलिदानों की विजय का प्रतीक था।

14 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में आयोजित विशेष समारोह में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना ऐतिहासिक 'नियति से साक्षात्कार' (Tryst with Destiny) भाषण दिया। जैसे ही घड़ी ने आधी रात का समय पार किया, भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। लोग सड़कों पर निकल आए, मिठाइयाँ बाँटी गईं, मंदिरों में घंटियाँ बजीं, मस्जिदों में दुआएँ हुईं, गुरुद्वारों और गिरिजाघरों में विशेष प्रार्थनाएँ आयोजित की गईं।

स्वतंत्रता की घोषणा के बाद 15 अगस्त 1947 को दिल्ली में ऐतिहासिक समारोह आयोजित किए गए। काउंसिल हाउस (वर्तमान संसद भवन) पर पहली बार राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इसके बाद विभिन्न सरकारी भवनों पर भी तिरंगा लहराया गया। अगले दिन, 16 अगस्त 1947 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से तिरंगा फहराया। यही परंपरा आगे चलकर प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा लाल किले पर ध्वजारोहण के रूप में स्थापित हुई।

जब पहली बार स्वतंत्र भारत का तिरंगा आकाश में लहराया, तब उपस्थित लोगों की आँखें नम थीं। अनेक स्वतंत्रता सेनानी अपने साथियों के बलिदान को याद कर भावुक हो उठे। वर्षों की तपस्या, संघर्ष और त्याग उस एक क्षण में साकार हो गए थे। तिरंगे के सम्मान में राष्ट्रगान और राष्ट्रभक्ति के नारों से पूरा वातावरण गुँज उठा।

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा अपने भीतर गहरा संदेश समेटे हुए है। इसका केसरिया रंग साहस, त्याग और बलिदान का प्रतीक है। सफेद रंग सत्य, शांति और पारदर्शिता का संदेश देता है, जबकि हरा रंग समृद्धि, विकास और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का प्रतीक है। ध्वज के मध्य स्थित गहरे नीले रंग का अशोक चक्र, जिसकी 24 तीलियाँ हैं, निरंतर प्रगति, न्याय, धर्म और कर्म का प्रतीक माना जाता है।

प्रथम ध्वजारोहण केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था। यह उस भारत के जन्म का उद्घोष था, जिसकी कल्पना महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने की थी। यह वह क्षण था जब भारत ने विश्व समुदाय के समक्ष स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और संप्रभु राष्ट्र के रूप में अपना परिचय दिया।

आज भी प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को जब प्रधानमंत्री लाल

किले की प्राचीर से तिरंगा फहराते हैं, तब देशवासियों को स्वतंत्र भारत के प्रथम ध्वजारोहण की वही ऐतिहासिक स्मृति ताज़ा हो जाती है। यह समारोह हमें उन वीरों के बलिदान का स्मरण कराता है, जिनके कारण आज हम स्वतंत्र वातावरण में जीवन जी रहे हैं।

स्वतंत्र भारत का प्रथम ध्वजारोहण हमें यह संदेश देता है कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि एक महान जिम्मेदारी भी है। हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए, संविधान के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए तथा देश की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए निरंतर कार्य करना चाहिए।

प्रथम ध्वजारोहण का वह ऐतिहासिक क्षण भारतीय इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। जब भी तिरंगा आकाश में लहराता है, वह हमें उन अमर बलिदानों की याद दिलाता है जिनकी बदौलत भारत स्वतंत्र हुआ। यही उस ऐतिहासिक ध्वजारोहण का सबसे बड़ा संदेश और सबसे बड़ी प्रेरणा है।

जय हिन्द! वंदे मातरम्!

विश्व मानवतावादी दिवस : मानवता ही सबसे बड़ा धर्म मानव सेवा, करुणा और सहयोग की भावना को समर्पित एक वैश्विक दिवस

प्रत्येक वर्ष 19 अगस्त को विश्व मानवतावादी दिवस (World Humanitarian Day) मनाया जाता है। यह दिवस उन लाखों मानवतावादी कार्यकर्ताओं, चिकित्सकों, स्वयंसेवकों, सामाजिक संगठनों तथा राहतकर्मियों के सम्मान में मनाया जाता है, जो युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं, महामारी, अकाल, बाढ़, भूकंप और अन्य संकटों के समय अपने प्राणों की परवाह किए बिना मानव जीवन बचाने का कार्य करते हैं। साथ ही यह दिन समाज में करुणा, सहानुभूति, सहयोग और सेवा की भावना को सुदृढ़ करने का संदेश भी देता है।

विश्व मानवतावादी दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह पूरी मानवता के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का स्मरण कराता है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर प्रत्येक जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता करें।

दिवस का इतिहास—

विश्व मानवतावादी दिवस की स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2008 में की गई। इसके पीछे वर्ष 2003 में इराक की राजधानी बगदाद स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय पर हुए भीषण बम विस्फोट की दुखद घटना थी, जिसमें संयुक्त राष्ट्र के कई अधिकारी और कर्मचारी शहीद हो गए थे। इस घटना ने पूरी दुनिया को यह एहसास कराया कि मानवता की सेवा करने वाले लोग भी अनेक प्रकार के जोखिमों का सामना करते हैं।

इसी स्मृति में 19 अगस्त को विश्व मानवतावादी दिवस घोषित किया गया, ताकि उन सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी जा सके जो मानव सेवा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देते हैं।

मानवतावाद का वास्तविक अर्थ—

मानवतावाद का अर्थ है- हर व्यक्ति के जीवन सम्मान और अधिकारों का आदर करना। इसका उद्देश्य किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना प्रत्येक मानव की सहायता करना है।

मानवतावादी सोच हमें सिखाती है कि किसी भूखे को

भोजन देना, प्यासे को पानी पिलाना, घायल की सहायता करना, शिक्षा से वंचित बच्चों को पढ़ाना, रक्तदान, अंगदान, देहदान, पर्यावरण संरक्षण, दिव्यांगजनों और वृद्धजनों की सहायता करना- ये सभी मानवता की सच्ची सेवा हैं।

आपदाओं में मानवता की मिसाल—

विश्वभर में जब भी कोई प्राकृतिक या मानवीय संकट आता है, तब हजारों स्वयंसेवक और राहतकर्मी तत्काल सहायता के लिए आगे आते हैं। भूकंप, बाढ़, चक्रवात, महामारी, युद्ध और अन्य संकटों के दौरान भोजन, चिकित्सा, दवाइयाँ, सुरक्षित आश्रय और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर लाखों लोगों का जीवन बचाया जाता है।

भारत में भी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), सेना, पुलिस, स्वास्थ्यकर्मी, रेडक्रॉस, विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ और हजारों स्वयंसेवक हर संकट की घड़ी में सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कोरोना महामारी के दौरान डॉक्टरों, नर्सों, सफाईकर्मियों, पुलिसकर्मियों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने जिस समर्पण के साथ कार्य किया, वह मानवता की अनुपम मिसाल बन गया।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता—

वर्तमान समय में दुनिया अनेक चुनौतियों से गुजर रही है। जलवायु परिवर्तन, युद्ध, विस्थापन, गरीबी, भूख, महामारी और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे समय में मानवतावादी मूल्यों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

सिर्फ सरकारों के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। प्रत्येक नागरिक का भी दायित्व है कि वह अपनी क्षमता के अनुसार समाज के कमजोर और जरूरतमंद वर्गों की सहायता करें।

युवा पीढ़ी की भूमिका—

युवाओं के पास ऊर्जा, नवाचार और सामाजिक परिवर्तन की अपार क्षमता होती है। यदि युवा स्वैच्छिक सेवा, रक्तदान,

अंगदान जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा अभियान, स्वास्थ्य शिविर, डिजिटल साक्षरता और आपदा राहत कार्यों में भाग लें, तो समाज में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सेवाएं सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े कार्यक्रमों को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है।

मानवता की संस्कृति को अपनाने का संकल्प—

विश्व मानवतावादी दिवस हमें यह संदेश देता है कि सच्ची महानता धन या पद से नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में आशा,

सहारा और मुस्कान लाने से प्राप्त होती है। प्रत्येक व्यक्ति यदि प्रतिदिन एक छोटा-सा मानवीय कार्य करने का संकल्प ले, तो समाज में करुणा, सद्भाव और भाईचारे का वातावरण और अधिक मजबूत होगा।

मानवता ही वह शक्ति है जो पूरी दुनिया को एक परिवार के रूप में जोड़ती है। सेवाएं संवेदना और सहयोग की यही भावना विश्व मानवतावादी दिवस का वास्तविक संदेश है।

‘मानवता का सबसे सुंदर रूप वही है, जिसमें किसी अजनबी का दुःख भी अपना प्रतीत हो और उसकी सहायता करना हमारा कर्तव्य बन जाए।’

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जयंती: आधुनिक भारत के निर्माण का दूरदर्शी नेतृत्व 20 अगस्त को राष्ट्र करता है भारत के सबसे युवा प्रधानमंत्री को नमन



भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जयंती प्रत्येक वर्ष 20 अगस्त को पूरे देश में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई जाती है। इस अवसर पर विभिन्न सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा संगोष्ठियाँ, विचार गोष्ठियाँ, वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर, युवा कार्यक्रम तथा सद्भावना से जुड़े आयोजन किए जाते हैं। राजीव गांधी को भारत में सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, कंप्यूटर क्रांति, पंचायती राज व्यवस्था तथा युवाओं को नई दिशा देने वाले दूरदर्शी नेता के रूप में याद किया जाता है।

प्रारंभिक जीवन—

राजीव गांधी का जन्म 20 अगस्त 1944 को मुंबई (तत्कालीन बंबई) में हुआ। उनके पिता फिरोज गांधी और माता श्रीमती इंदिरा गांधी थीं। वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाती थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून के प्रसिद्ध विद्यालय में प्राप्त की तथा बाद में उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए। राजनीति में आने से पहले वे एक पेशेवर

पायलट के रूप में कार्यरत थे और भारतीय विमान सेवा में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। उनका स्वभाव शांत, सरल और तकनीक के प्रति विशेष रुचि रखने वाला माना जाता था।

राजनीति में प्रवेश—

अपने छोटे भाई संजय गांधी के निधन के बाद राजीव गांधी सक्रिय राजनीति में आए। वर्ष 1981 में वे लोकसभा के सदस्य चुने गए। 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। मात्र 40 वर्ष की आयु में वे भारत के सबसे युवा प्रधानमंत्री बने।

आधुनिक भारत की नींव—

राजीव गांधी ने भारत को आधुनिक तकनीक से जोड़ने का सपना देखा। उनके कार्यकाल में कंप्यूटर और दूरसंचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल हुई। उस समय कंप्यूटरीकरण का विरोध भी हुआ, लेकिन उन्होंने भविष्य की आवश्यकताओं को समझते हुए तकनीकी विकास को बढ़ावा दिया। आज भारत जिस डिजिटल युग में आगे बढ़ रहा है, उसकी प्रारंभिक आधारशिला राजीव गांधी के समय में रखे गए अनेक निर्णयों से भी जुड़ी मानी जाती है। दूरसंचार सेवाओं का विस्तार, सूचना प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन तथा वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों ने देश के विकास को नई दिशा दी।

युवाओं और लोकतंत्र को सशक्त बनाने का प्रयास—

राजीव गांधी का मानना था कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसके युवा हैं। उनके नेतृत्व में मतदान की न्यूनतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई, जिससे करोड़ों युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिला। उन्होंने स्थानीय स्वशासन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से पंचायती राज संस्थाओं को अधिक अधिकार देने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की। ग्रामीण विकास और महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के विचार को भी उन्होंने प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय एकता और विकास—

राजीव गांधी ने शिक्षा, विज्ञान, संचार, ग्रामीण विकास तथा प्रशासनिक सुधारों पर विशेष ध्यान दिया। उनका उद्देश्य ऐसा भारत बनाना था जो आधुनिक भी हो और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध भी। हालाँकि उनके कार्यकाल में कई राजनीतिक और प्रशासनिक चुनौतियाँ भी सामने आईं फिर भी देश के आधुनिकीकरण के लिए उनके योगदान को व्यापक रूप से याद किया जाता है।

दुःखद निधन—

21 मई 1991 को तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में चुनाव प्रचार के दौरान एक आत्मघाती विस्फोट में राजीव गांधी की मृत्यु हो गई। उनके निधन से पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। बाद में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता—

आज जब भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था, सूचना

प्रौद्योगिकी, स्टार्टअप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक संचार व्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, तब राजीव गांधी की दूरदर्शी सोच का उल्लेख अक्सर किया जाता है। युवाओं को अवसर प्रदान करने, विज्ञान और तकनीक को अपनाने तथा आधुनिक भारत के निर्माण की उनकी परिकल्पना आज भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

निष्कर्ष—

राजीव गांधी जयंती केवल एक महान नेता को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि आधुनिक, वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक और समावेशी भारत के निर्माण के संकल्प को दोहराने का भी दिवस है। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि बदलते समय के साथ नई सोच, नई तकनीक और युवाओं की ऊर्जा को अपनाकर ही राष्ट्र निरंतर प्रगति कर सकता है।

‘युवा शक्ति, विज्ञान, तकनीक और लोकतंत्र में विश्वास- यही था राजीव गांधी के आधुनिक भारत का सपना।’

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस:
अनंत आकाश की ओर
बढ़ते भारत के
आत्मविश्वासपूर्ण कदम...

चंद्रमा से लेकर सूर्य तक, अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की नई उड़ान

भारत आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में अपनी सशक्त पहचान बना चुका है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में देश की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा का प्रमाण हैं, बल्कि यह आत्मनिर्भर भारत के सपने को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का प्रतीक हैं। इन्हीं ऐतिहासिक उपलब्धियों के सम्मान में प्रतिवर्ष 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया जाता है।

यह दिवस भारत के लिए इसलिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि 23 अगस्त 2023 को भारत के चंद्रयान-3 मिशन के विक्रम लैंडर ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग की थी। इसके साथ ही भारत ऐसा करने वाला विश्व का पहला देश बना तथा चंद्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश भी बना। यह उपलब्धि केवल वैज्ञानिक सफलता नहीं थीए बल्कि 140 करोड़ भारतीयों के आत्मविश्वास, परिश्रम और संकल्प की विजय थी।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाने का उद्देश्य —

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना, विद्यार्थियों और युवाओं में वैज्ञानिक सोच विकसित करना तथा देश के वैज्ञानिकों के

योगदान को सम्मान देना है। यह दिवस बच्चों और युवाओं को विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

आज विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है। अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग मौसम पूर्वानुमान, संचार, इंटरनेट, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन, रक्षा, नौवहन और पर्यावरण संरक्षण जैसे अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। इसलिए राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस प्रत्येक नागरिक को यह समझाने का अवसर भी है कि अंतरिक्ष विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रेरक यात्रा —

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम सीमित संसाधनों से शुरू हुआ, लेकिन वैज्ञानिकों की लगन और दूरदर्शी नेतृत्व ने इसे विश्व के सबसे सफल कार्यक्रमों में शामिल कर दिया। भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई ने यह विश्वास व्यक्त किया था कि यदि अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग आम नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने के लिए किया जाए, तो यह देश के विकास का सबसे प्रभावी माध्यम बन सकती है।

इसके बाद डॉ. सतीश धवन, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल

कलाम सहित अनेक वैज्ञानिकों ने इस अभियान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। आज भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) विश्व के सबसे विश्वसनीय अंतरिक्ष संगठनों में गिना जाता है।

इसरो की ऐतिहासिक उपलब्धियाँ—

भारत की अंतरिक्ष यात्रा अनेक गौरवपूर्ण उपलब्धियों से भरी हुई है। वर्ष 1975 में भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में भेजा गया। इसके बाद रोहिणी उपग्रह, इनसैट, आईआरएस, जीएसएलवी, पीएसएलवी जैसे अनेक कार्यक्रमों ने भारत को नई पहचान दिलाई।

मंगलयान (मार्स ऑर्बिटर मिशन) की सफलता ने दुनिया को चौंका दिया। भारत पहले ही प्रयास में मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने वाला पहला देश बना। इस मिशन की कम लागत और उच्च सफलता दर की विश्वभर में सराहना हुई।

इसके बाद चंद्रयान-1 ने चंद्रमा पर जल के अणुओं की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चंद्रयान-2 पूरी तरह सफल नहीं हो सका, लेकिन उससे प्राप्त अनुभव ने चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता का मार्ग प्रशस्त किया।

चंद्रयान-3: भारत की ऐतिहासिक उपलब्धि—

23 अगस्त 2023 का दिन भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो चुका है। इस दिन शाम को पूरे देश की निगाहें इसरो के मिशन कंट्रोल सेंटर पर थीं। जैसे ही विक्रम लैंडर ने चंद्रमा की सतह को सफलतापूर्वक स्पर्श किया, पूरा देश खुशी से झूम उठा।

इसके बाद प्रज्ञान रोवर ने चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक वैज्ञानिक प्रयोग किए। इन प्रयोगों से चंद्रमा की मिट्टी, तापमान और रासायनिक संरचना से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

यह सफलता केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह संदेश भी था कि भारत कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

आदित्य-एल1: सूर्य की ओर भारत की उड़ान—

चंद्रमा के बाद भारत ने सूर्य के अध्ययन के लिए

आदित्य-एल1 मिशन भेजा। इस मिशन का उद्देश्य सूर्य की बाहरी परत, सौर हवाओं और अंतरिक्ष मौसम का अध्ययन करना है।

सूर्य की गतिविधियाँ पृथ्वी के संचार, उपग्रहों और विद्युत प्रणालियों को प्रभावित करती हैं। ऐसे में इस मिशन से प्राप्त जानकारी भविष्य में अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

गगनयान: अंतरिक्ष में भारतीय मानव मिशन—

भारत अब मानव अंतरिक्ष उड़ान की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। गगनयान मिशन के माध्यम से भारतीय अंतरिक्ष यात्री स्वदेशी तकनीक से अंतरिक्ष यात्रा करेंगे। यह मिशन भारत को उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में स्थापित करेगा, जिन्होंने अपने बलबूते मानव को अंतरिक्ष में भेजा है।

इस मिशन की सफलता से विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और उद्योग के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खुलेंगी।

अंतरिक्ष तकनीक का आम जीवन में महत्व—

अक्सर यह प्रश्न पूछा जाता है कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों से आम नागरिक को क्या लाभ मिलता है? वास्तव में आज हमारा दैनिक जीवन उपग्रहों पर काफी हद तक निर्भर है।

मौसम की सटीक जानकारी किसानों को खेती में सहायता देती है। चक्रवात और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं की समय पर चेतावनी लाखों लोगों की जान बचाती है। जीपीएस और नौवहन प्रणाली यात्रा को आसान बनाती है। दूरदराज क्षेत्रों में शिक्षा और टेलीमेडिसिन की सुविधाएँ उपग्रहों के माध्यम से उपलब्ध हो रही हैं। बैंकिंग, मोबाइल संचार, डिजिटल भुगतान और इंटरनेट सेवाएँ भी अंतरिक्ष तकनीक से जुड़ी प्रणालियों पर निर्भर करती हैं।

युवाओं के लिए प्रेरणा—

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस युवाओं को यह संदेश देता है कि बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने के लिए संसाधनों से अधिक आवश्यक है दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर प्रयास।

आज देश के विद्यालयों और महाविद्यालयों में विज्ञान क्लब, रोबोटिक्स, ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और

अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि तेजी से बढ़ रही है। अनेक छात्र छोटे उपग्रह विकसित कर रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे हैं। भारत का लक्ष्य केवल अंतरिक्ष में पहुँचना नहीं, बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करना है। इसमें युवा पीढ़ी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी।

आत्मनिर्भर भारत और अंतरिक्ष उद्योग—

भारत में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ने से अंतरिक्ष उद्योग नई गति प्राप्त कर रहा है। अनेक भारतीय स्टार्टअप छोटे उपग्रह, प्रक्षेपण तकनीक, अंतरिक्ष अनुप्रयोग और नई तकनीकों पर कार्य कर रहे हैं। इससे रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हो रहे हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत की आर्थिक प्रगति, राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को नई मजबूती प्रदान कर रही है।

वैश्विक सहयोग की नई दिशा—

भारत केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के हित में भी अंतरिक्ष अनुसंधान को आगे बढ़ा रहा है। भारतीय प्रक्षेपण यानों द्वारा अनेक देशों के उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में स्थापित किए जा चुके हैं। इससे भारत की विश्वसनीयता और वैज्ञानिक प्रतिष्ठा लगातार बढ़ी है।

अंतरिक्ष विज्ञान आज वैश्विक सहयोग का माध्यम बन

चुका है, जहाँ ज्ञान, तकनीक और अनुसंधान पूरी मानवता के विकास के लिए साझा किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष—

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास, नवाचार और असीम संभावनाओं का प्रतीक है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती। यदि संकल्प मजबूत हो, वैज्ञानिक सोच विकसित हो और राष्ट्र निर्माण का लक्ष्य सामने हो, तो आकाश भी सीमा नहीं रहता।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देश का प्रत्येक विद्यार्थी विज्ञान को केवल एक विषय नहीं, बल्कि भविष्य निर्माण का माध्यम माने। वैज्ञानिक सोच, अनुसंधान की संस्कृति और नवाचार की भावना ही भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाएगी।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस हमें यह संदेश देता है कि चंद्रमा और सूर्य तक पहुँचने वाली भारत की यात्रा अभी शुरूआत है। आने वाले वर्षों में भारतीय वैज्ञानिक नई खोजों, नई तकनीकों और नए अभियानों के माध्यम से मानवता के विकास में और भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। यह दिवस प्रत्येक भारतीय को गर्व, प्रेरणा और आत्मविश्वास से भर देता है कि भारत का भविष्य सचमुच अंतरिक्ष जितना व्यापक और अनंत है।

पृष्ठ 20 का शेष—

रक्षा बंधन का महत्व केवल भाई-बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं है। यह विश्वास, सम्मान, सहयोग, कर्तव्य और जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करता है। यह पर्व हमें यह सीख देता है कि समाज में हर व्यक्ति की सुरक्षा, सम्मान और सहयोग हमारा नैतिक दायित्व है। प्रेम, त्याग और आत्मीयता से ही परिवार, समाज और राष्ट्र मजबूत बनते हैं।

आज जब आधुनिक जीवनशैली के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरियां बढ़ रही हैं, तब रक्षा बंधन हमें रिश्तों की गरिमा

बनाए रखने की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि सच्चे संबंध उपहारों से नहीं, बल्कि विश्वास, संवेदना और अपनत्व से मजबूत होते हैं।

रक्षा बंधन भारतीय संस्कृति का ऐसा पावन पर्व है जो प्रेम, सुरक्षा, विश्वास और पारिवारिक एकता का संदेश देता है। यह त्योहार हमें अपने संबंधों को स्नेह, सम्मान और जिम्मेदारी के साथ निभाने की प्रेरणा देता है। यदि हम रक्षा बंधन की भावना को अपने दैनिक जीवन में अपनाएं, तो हमारा परिवार, समाज और राष्ट्र अधिक सशक्त, संवेदनशील और समरस बन सकता है।

BHUMI

MARKETING

Digital Ideas, Powerful Solutions

आज ही अपने व्यापार को बनाएं डिजिटल

Bhumi Marketing

YOUR GROWTH, OUR MISSION



अब समय है
अपने बिजनेस को
ऑनलाइन पहचान, अधिक ग्राहक
और अधिक बिक्री देने का।

- 9887700059
- www.bhumi.marketing
- Support@bhumi.marketing
- Whatsapp
- Google Map
- SMS
- Facebook
- Instagram
- Website
- E-mail

BHUMI MARKETING – आपकी डिजिटल सफलता का पूरा समाधान

01 WEBSITE DEVELOPMENT - Custom Website Design - Responsive Design - User Friendly - SEO Friendly	02 SEO SERVICES - On-Page SEO - Off-Page SEO - Technical SEO - Keyword Research	03 SOCIAL MEDIA MARKETING - Page Management - Content Creation - Audience Engagement - Brand Awareness	04 GOOGLE ADS - Search Ads - Display Ads - Shopping Ads - Lead Generation
05 META ADS - Facebook Ads - Instagram Ads - Audience Targeting - Retargeting Ads	06 CRM & IVR SERVICES - Customer Management - Lead Management - IVR Setup & Management - Business Automation	07 WHATSAPP API & AUTOMATION - WhatsApp API Integration - Auto Reply / Chatbot - Bulk Messaging - Smart Automation	08 BULK SMS RCS - Transactional SMS - Promotional SMS - RCS Messaging - Bulk SMS Campaign

OUR CORE SERVICES

1. Digital Marketing – ब्रांड को बढ़ाएं, ग्राहक बढ़ाएं, बिक्री बढ़ाएं।
2. Website Development – प्रोफेशनल वेबसाइट जो आपके बिजनेस को नई पहचान दे।
3. WhatsApp Marketing – सीधे ग्राहक से जुड़ें, तेजी से अपने संदेश पहुंचाएं।
4. C.R.M. (Customer Relationship Management) – ग्राहक संबंधों को मजबूत करें, बिजनेस बढ़ाएं।
5. I.V.R. (Interactive Voice Response) – प्रोफेशनल कॉल हैंडलिंग, बेहतर ग्राहक अनुभव।
6. Whatsapp API & Automation – ऑटोमेशन से समय बचाएं, बढ़ाएं प्रोडक्टिविटी।
7. Bulk SMS RCS (Transactional & Promotional) – एक साथ हजारों ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाएं।

Why Bhumi Marketing?

- ✓ WhatsApp & WhatsApp API
- ✓ Google Business & Google Maps
- ✓ SMS & Email Marketing
- ✓ Facebook & Instagram Ads
- ✓ Website + CRM + IVR Integration

कम बजट में बेहतरीन परिणाम

- हैं छोटे व्यापार से लेकर बड़ी कंपनी तक समाधान
- लीड से लेकर सेल तक पूरा सिस्टम
- हर बिजनेस के लिए अलग डिजिटल रणनीति

आज ही अपने बिजनेस को डिजिटल बनाएं !

- वेबसाइट
- डिजिटल मार्केटिंग
- ब्राह्मण ऑटोमेशन
- CRM, IVR
- लीड सिस्टम



आज ही
Free Consultation
हेतु कॉल करें-

9887700059

9887700059
www.bhumi.marketing
Support@bhumi.marketing

रक्षा बंधन : प्रेम, विश्वास और सुरक्षा का पावन पर्व



रक्षा बंधन भारत के प्रमुख और अत्यंत लोकप्रिय त्योहारों में से एक है। यह पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास, स्नेह और सुरक्षा के पवित्र बंधन का प्रतीक है। प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्योहार भारतीय संस्कृति में पारिवारिक मूल्यों, आत्मीयता और सामाजिक एकता का संदेश देता है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भावनाओं का ऐसा उत्सव है जो परिवारों को एक सूत्र में बांधता है।

रक्षा बंधन का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब देवताओं और असुरों के बीच युद्ध में देवराज इंद्र संकट में पड़ गए, तब उनकी पत्नी शची (इंद्राणी) ने वैदिक मंत्रों से अभिमंत्रित रक्षा-सूत्र उनकी कलाई पर बांधा। इस रक्षा-सूत्र के प्रभाव से इंद्र ने विजय प्राप्त की। तभी से रक्षा-सूत्र बांधने की परंपरा का प्रारंभ माना जाता है।

महाभारत में भी रक्षा बंधन का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि जब भगवान श्रीकृष्ण की उंगली सुदर्शन चक्र से कट गई, तब द्रौपदी ने अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़कर उनकी उंगली पर बांध दिया। श्रीकृष्ण ने इस स्नेह और त्याग के बदले द्रौपदी की रक्षा का संकल्प लिया और चीरहरण के समय उनकी लाज बचाई। यह प्रसंग रक्षा बंधन की भावना को और अधिक पवित्र बनाता है।

इतिहास में भी इस पर्व के अनेक प्रेरणादायक उदाहरण मिलते हैं। सबसे प्रसिद्ध कथा रानी कर्णावती और मुगल सम्राट हुमायूं की है। कहा जाता है कि रानी कर्णावती ने संकट की घड़ी में हुमायूं को राखी भेजकर रक्षा की प्रार्थना की थी। हुमायूं ने इस संबंध का सम्मान किया व सहायता के लिए सेना भेजी। यह

घटना बताती है कि रक्षा बंधन केवल रक्त संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवता, विश्वास और सम्मान का भी प्रतीक है।

रक्षा बंधन के दिन प्रातः स्नान कर घरों में पूजा की जाती है। बहनें पूजा की थाली सजाती हैं, जिसमें रोली, चावल, दीपक, मिठाई और राखी रखी जाती है। शुभ मुहूर्त में बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर आरती उतारती है, उसकी कलाई पर राखी बांधती है और उसकी लंबी आयु, सुख-समृद्धि तथा सफलता की कामना करती है। भाई अपनी बहन को उपहार देता है और जीवनभर उसकी रक्षा करने का वचन देता है। इसके बाद परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर इस पर्व की खुशियां साझा करते हैं।

आज के समय में रक्षा बंधन का स्वरूप और भी व्यापक हो गया है। बहनें अपने भाइयों को डाक, कूरियर और ऑनलाइन माध्यमों से भी राखी भेजती हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीय भी इस पर्व को बड़े उत्साह से मनाते हैं। कई स्थानों पर महिलाएं सैनिकों, पुलिसकर्मियों, चिकित्सकों, समाजसेवियों और पर्यावरण रक्षकों को भी राखी बांधकर उनके प्रति सम्मान और विश्वास व्यक्त करती हैं। इससे यह पर्व सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण अब बीज युक्त, सूती, हस्तनिर्मित और पर्यावरण-अनुकूल राखियों का प्रचलन बढ़ रहा है। अनेक विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं द्वारा वृक्षों को राखी बांधकर प्रकृति की रक्षा का संकल्प भी लिया जाता है। यह परंपरा हमें प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण का संदेश देती है। **शेष पृष्ठ 18 पर...**



Navdhriti Manavadhikar Foundation



Trusted Financial
Solutions Partner

PRIVATE FUNDING

**EQUITY-BASED FUNDING
OPTIONS AVAILABLE**

Low CIBIL / NPA / OTS
cases accepted



Low CIBIL / NPA /
OTS cases accepted



ROI 9-13%
Reducing



Collateral Value
0-80% eligibility



PAN India
Reach



**TRANSPARENT &
DOCUMENTED PROCESS**



**GET IN TOUCH TODAY
FOR YOUR FUNDING NEEDS**

9251120059



Quick
Evaluation



Minimal
Documentation



Flexible
Support



Faster
Process

सामान्य ज्ञान—

राजस्थान संक्षिप्त परिचय

101. राजस्थान के जून माह में न्यूनतम वायुदाब जिस जिले में सम्भावित है, वह है—

उत्तर— जैसलमेर

102. अरावली पर्वत की उच्चतम चोटी कौन-सी है?

उत्तर— गुरु शिखर, (माउण्ट-आबू)

103. बीकानेर की जलवायु को वर्णित कर सकते हैं?

उत्तर— गर्म मरूस्थलीय

104. अरावली की राजस्थान में सबसे ऊँची चोटी किस जिले में है

उत्तर— सिरोंही

105. राजस्थान का जिला जिसकी भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक व पर्यावरणीय सीमा मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश से मिलती है।

उत्तर— धौलपुर

106. राजस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से जुड़े जिलों की संख्या कितनी है।

उत्तर— 4

107. राजस्थान राज्य के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या को कौनसा जिला लगभग एक समान प्रतिशत अंक में रखता है।

उत्तर— सिरोंही

108. जैसलमेर, राजस्थान का सबसे बड़ा जिला धौलपुर से कितना बड़ा है?

उत्तर— 12.66 गुणा

109. राजस्थान में खेड़ा ब्रह्मा से खेतड़ी तक अरावली पर्वतमाला की लम्बाई कितनी है?

उत्तर— 550 किमी.

110. अरावली पर्वतमाला का कितने प्रतिशत भाग राजस्थान में है?

उत्तर— 79.48 प्रतिशत भाग

111. राजस्थान देश के किस भाग में स्थित है?

उत्तर— पश्चिमी

112. कर्नल जेम्स टोड ने किस पर्वत चोटी को संतों का

शिखर कहा है?

उत्तर— गुरु शिखर

113. राजस्थान में कम वर्षा का कारण अरावली पर्वत माला की कौनसी स्थिति के कारण है?

उत्तर— इसका मानसून के समानान्तर होना

114. बांसवाड़ा व डूंगरपुर का प्राचीन नाम क्या है?

उत्तर— बागड़

115. राजस्थान के किस जिले में सूर्य की किरणों का तिराछापन सर्वाधिक होता है?

उत्तर— श्रीगंगानगर में

116. राजस्थान का जिला रेगिस्तान प्रभार हेतु जाना जाता है—

उत्तर— नाचना

117. दक्षिणी पूर्वी राजस्थान के दक्कन लावा पठार क्षेत्र में भैसरोड़गढ़ से लेकर बिजौलिया तक पठारी भाग कहलाता है?

उत्तर— ऊपरमाल

118. 'सेम' का सम्बन्ध किस स्थिति से है?

उत्तर— पारिस्थितिकी में परिवर्तन से

119. लाठी शृंखला क्या है?

उत्तर— भू-गर्भीय जलपट्टी

120. जिस दिशा में अरावली श्रेणियों की चौड़ाई बढ़ती जाती है वह है?

उत्तर— उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम

121. राजस्थान के किस क्षेत्र में विन्ध्य पठार का विस्तार है?

उत्तर— दक्षिण-पूर्व

122. रेगिस्तान में उत्पन्न वायुभंवर क्या कहलाता है?

उत्तर— भभूल्या

123. अरावली श्रेणी की चोटियों के नाम क्या-क्या है?

उत्तर— गुरु शिखर, सेर, जरगा, अचलगढ़, रघुनाथगढ़, खोह, तारागढ़ व भैराच

124. शेखावटी भू-भाग में चूनेदार अद्योस्तर अनावर्त होने से आसानी से बने कुएँ स्थानीय भाषा में क्या कहलाते हैं?

उत्तर— जोहड़

125. शक संवत के अनुसार 23 जून तथा 23 जुलाई के मध्य के काल को किस माह के रूप में जाना जाता है ?

उत्तर- आषाढ़

126. हाड़ौती पठार की मिट्टी है-

उत्तर- काली

127. थार के मरुस्थल में न्यून वर्षा का कारण जिन पवनों की अरावली के साथ समानान्तरता है, वे हैं-

उत्तर- अरब सागरीय मानसून

128. शेखावटी क्षेत्र में कौन से बालूका स्तूपों से सर्वाधिक हानि होती है?

उत्तर- बरखान बालुका स्तूप से

129. जल द्वारा सर्वाधिक अपरदन किस जिले में होता है?

उत्तर- कोटा में

130. अरावली पर्वतमाला की कुल लम्बाई कितनी है?

उत्तर- 692 किमी.

131. रेतीला मरुस्थल क्या कहलाता है ?

उत्तर- ईर्ष

132. पत्थरीला मरुस्थल क्या कहलाता है?

उत्तर- हम्माद

133. मिश्रित मरुस्थल क्या कहलाता है?

उत्तर- रैग

134. भूमिगत हवाईअड्डे कौन-कौन से हैं ?

उत्तर- नाल व सूरतगढ़ (गंगानगर)

135. राजस्थान में नगर निगम क्षेत्र हैं?

उत्तर- 7

136. सर्वाधिक परत भूमि किस जिले में है?

उत्तर- जोधपुर में

137. सर्वाधिक लवणीय परत भूमि वाला जिला कौन-सा है?

उत्तर- पाली

138. सर्वाधिक व्यर्थ पठारी भूमि वाला जिला कौन-सा है?

उत्तर- राजसमन्द

139. सर्वाधिक बीहड़ भूमि वाले जिले हैं ?

उत्तर- करौली व सवाईमाधोपुर

140. अरावली के पूर्व व पश्चिम में कितने जिले हैं?

उत्तर- पूर्व में 19 व पश्चिम में 14

141. अरावली पर्वतमाला का सर्वाधिक लाभ क्या है?

उत्तर- पश्चिम के रेगिस्तानी भाग को पूर्व में आने से रोकता है।

142. क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा व सबसे छोटा सम्भाग कौन-सा है?

उत्तर- जोधपुर व भरतपुर

143. पश्चिम राज. में किन मानसूनों से सर्वाधिक वर्षा होती है

उत्तर- हिन्द महासागर

144. भूमि के कटाव को रोकने हेतु प्राथमिक भू-परिष्करण?

उत्तर- मेड़बन्दी

145. भारतीय मौसम विभाग की वैद्यशाला कहाँ है?

उत्तर- जयपुर में

146. जलमग्नता से उत्पन्न समस्या है?

उत्तर- सेम समस्या

147. सेवण का वानस्पतिक नाम क्या है?

उत्तर- लसीयुरूस सीडीकुस

148. अमेरिका की अप्लेशियन पहाड़ी की तुलना राजस्थान की किस पहाड़ी से की गई है?

उत्तर- अरावली से

149. स्कन्ध पर्वत किनके मध्य जल विभाजक कार्य करता है?

उत्तर- अरबसागर व बंगाल की खाड़ी के मध्य

150. सेवण का स्थानीय नाम क्या है?

उत्तर- लीलोन

क्रमशः

शेष प्रश्न अगले अंक में...

छोटे कदम बड़े सपनों की ओर | Since 1999

JAI JASOL

BUILDING MATERIAL



BEST INVESTMENT



BEST RETURN



विश्वसनीयता
हमारी पहचान



पारदर्शिता
हमारी नीति



गुणवत्ता
हमारी प्राथमिकता



आपका भरोसा
हमारी जिम्मेदारी



हाइवे प्रोजेक्ट

- ✓ सभी प्रकार के निर्माण सामग्री
- ✓ समय पर सप्लाई
- ✓ उत्तम गुणवत्ता
- ✓ सरकारी मानकों के अनुसार



रेलवे प्रोजेक्ट

- ✓ सभी प्रकार के निर्माण सामग्री
- ✓ समय पर सप्लाई
- ✓ उत्तम गुणवत्ता
- ✓ सरकारी मानकों के अनुसार



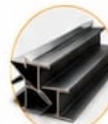
सीमेंट



ईंट



सरिया



एंगल / चैनल



गिट्टी



रेती



पेंट



और सभी निर्माण
सामग्री



समय पर डिलीवरी
आपके निर्माण का साथी



बेहतर सेवा
आपकी संतुष्टि हमारा लक्ष्य



हमारा पता
आपके नजदीक, हमेशा आपके साथ

पार्टनरशिप आमंत्रित



Contact us :

9460087795



--	--	--	--	--	--	--